श्री धरणीधर भगवान जी के प्राण प्रतिष्ठा समारोह कोटा में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

जगत के पालक आराध्य भगवान श्री धरणीधर जी की जय।

ग्राम मांडूकला, टोंक में आज भगवान धरणीधर जी के इस भव्य प्राण प्रतिष्ठा समारोह में धाकड़ समाज के समस्त गणमान्य जनों के बीच उपस्थित होकर मुझे अति प्रसन्नता हो रही है।

ऋषि मांडव की इस तपोस्थली मांडूकला में आज पूरे देश से पधारे धाकड़ समाज के लोगों को नमस्कार करता हूँ। यह इस स्थान की पावनता है कि मांडूकला को "मिनी पुष्कर" भी कहा जाता है। धाकड़ समाज ने अपनी भक्ति और श्रद्धा से इसे तीर्थ बना दिया है।

इस स्थान पर आराध्य भगवान धरणीधर जी विराजते हैं। समाज ने एकजुट होकर यहाँ भव्य मंदिर का निर्माण किया है। और आज भगवान को उनके नए स्थान पर विराजित किया जा रहा है। बहुत ही पावन अवसर है। मैं समाज के सभी जनों को इसके लिए बधाई देता हूँ। आपको साधुवाद देता हूँ। समाज का मंदिर समाज की एकजुटता से बनकर तैयार हुआ है। यह बहुत ही पावन बात है।

कोटा-बारा-बूंदी-झालावाड़ में धाकड़ समाज अच्छी संख्या में बसता है। मुझे समय समय पर आप समाज के कार्यक्रमों में बुलाते हो। मैं हर बार समय निकालकर भगवान धरणीधर और समाज का आशीर्वाद लेने ज़रूर आता हूँ।

ये आज कल की बात नहीं है। धाकड़ समाज से मेरा जुड़ाव बहुत पुराना है। समाज के लोग मेरे परिवार की तरह है। परिवार का साथ जैसे जीवन के हर कदम पर मिलता है, वैसे ही धाकड़ समाज के बंधुओं का साथ और सहयोग मुझे हमेशा मिलता रहा है।

भगवान विष्णु के शेषनाग अवतार श्री धरणीधर महाराज परिश्रम, शक्ति और सेवा के प्रतीक हैं। धरणीधर भगवान ने हल को शस्त्र की तरह प्रयोग किया था। धाकड़ समाज उन्हें आराध्य मानकर पूजा करता है।

खेतिहर धाकड़ समाज के हमारे मेहनतकश भाई - बहन अपनी पूरी क्षमता से अन्न उपजाते हैं और लोगों के पेट भरने का काम करते हैं। इसी के साथ अगर मानवता और

समाज पर कोई संकट आता है तो समाज के लोग उसका सामना करने के लिए भी तैयार रहते हैं। लोगों के कल्याण और रक्षा के लिए भी समाज सदा ही आगे रहता है।

भगवान धरणीधर के जीवन संदेश पर धाकड़ समाज चल रहा है। धाकड़ समाज ने सदा ही अपने कर्तव्यों पर बल दिया है। समाज के लिए मैं क्या कर सकता हूँ, मैं समाज के लिए किस प्रकार उपयोगी हो सकता हूँ, इस कर्तव्य भाव को धाकड़ समाज ने हमेशा ही आगे रखा है।

धाकड़ समाज कर्तव्य की इस भावना के साथ हमेशा आगे रहा है। समय-समय पर रक्तदान शिविर का आयोजन करना हो, गरीब कन्याओं का विवाह करवाना हो, या फिर मानवता के लिए कोई भी काम; सेवा को कर्तव्य मानकर पूरा करने वाला कोई समाज है तो वह धाकड़ समाज है।

कोरोना काल में भी मैंने देखा कि समाज के जिम्मेदार लोगों ने मोर्चा संभाला था। जरूरतमंदों के लिए भोजन और दवा -पानी की मदद की थी। जिससे जो बन पा रहा था, उसने वो सहायता की। हर साल भगवान धरणीधर महाराज की जयंती कार्यक्रम में भी रक्तदान कैम्प का आयोजन समाज करता रहा है।

आज हमारा हाड़ौती प्रदेश उन्नत खेती-बाड़ी के लिए जाना जाता है तो इसमें भी धाकड़ समाज की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।

धाकड़ किसान आंदोलन तो पूरे देश में प्रसिद्ध है। धाकड़ समाज से रूपा जी – करपा जी बेगूँ किसान आंदोलन में साल 1923 में शहीद हुए थे। उनके बलिदान का परिणाम था कि किसानों की मांगे मानी गई और बेगार प्रथा को समाप्त किया गया। मैं आज मांडूकला की इस पावन धरती से शहीद रूपा जी और करपा जी को नमन करता हूँ।

रूपा जी-करपा जी जिस समाज के आदर्श हो, वो समाज खेती – खलिहान और सावर्जनीक जीवन में में किस समर्पण और ऊर्जा से काम करता होगा, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है।

आपके परिश्रम का परिणाम है कि हाड़ौती का क्षेत्र आज सोयाबीन, मक्का, चावल और उड़द की बम्पर पैदावार करता है। खेती – किसानी का नाम आते ही खेती के परंपरागत तरीके हमारे मन में आते हैं। मगर अब जमाना बदल रहा है।

देश और दुनिया में नई-नई तकनीकों का विकास हुआ है। इन तकनीकों का उपयोग अब खेती-बाड़ी में भी हो रहा है।

किसान परिवारों के होनहार युवा आज अच्छी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। खेती में क्या नवाचार लाए जा सकते हैं, इसके बारे में जान रहे हैं। नई तकनीकों और नवाचारों को समझकर युवा अपने गाँवों में खेतों में उसे प्रयोग में ला रहे हैं। इसी का नतीजा है कि आज हमारे क्षेत्र में किसान आधुनिक तकनीक को अपनाकर अपनी फसल की पैदावार भी बढ़ा रहे हैं।

हाड़ौती के किसान स्प्रिंकलर से खेती करने लगे हैं। जैविक खेती करने लगे हैं। पानी बचाते हुए बूँद-बूँद सिंचाई कर रहे हैं। केमिकल मुक्त खेती, ऑर्गेनिक फार्मिंग और प्राकृतिक खेती की तरफ मेरे किसान बंधु बढ़ रहे हैं।

ये आपकी सामूहिकता, आपके परिश्रम, दायित्व और ज़िम्मेदारी के भाव का परिणाम है कि हमारा कोटा, हमारा हाड़ौती क्षेत्र आज खेती के क्षेत्र में सिरमौर बन रहा है।

ऐसे कार्यक्रमों से हमारी आस्था और भक्ति को तो बल मिलता ही है, इसी के साथ सामाजिक एकता भी मजबूत होती है। धाकड़ समाज सिर्फ कोटा तक सीमित नहीं है। बूँदी-बारां, सवाई माधोपुर और अन्य प्रदेशों में भी मथुरा, आगरा, मध्य प्रदेश में समाज के लोग निवास करते हैं। ऐसे आयोजन जब होते हैं तो सभी साथ मिलते हैं, सहभोज करते हैं और मिलकर कार्यक्रम का आनंद लेते हैं। इससे समाज में एकता और अपनत्व का संचार होता है।

हमारा देश अभी पिछले वर्ष ही आजादी के 75 साल पूरे कर चुका है। इन 75 वर्षों में देश को आगे बढ़ाने में धाकड़ समाज का महत्वपूर्ण योगदान है। लेकिन समाज की स्थिति के बारे में, आज भी हमारा समाज शैक्षणिक रूप से अधिक आगे नहीं बढ़ पाया है।

हालांकि पिछले कुछ वर्षों में समाज ने तरक्की की है, लेकिन वो तरक्की काफी नहीं है। 21वीं सदी में जब भारत अमृतकाल की यात्रा में आगे बढ़ रहा है, हमें अधिक गति से आगे बढ़ना होगा।

आज इस कार्यक्रम में मैं आपको यही एक मैसेज दूंगा कि हम अपने बालक-बालिकाओं की शिक्षा पर अधिक से अधिक निवेश करें। समाज के बेटे-बेटी आगे बढ़े, उच्च शिक्षा प्राप्त करें, इसके लिए समाज के स्तर पर सामूहिक प्रयासों को मजबूत करने की आवश्यकता है।

धाकड़ समाज से लड़के और लड़कियां.... कोई डॉक्टरी करें, कोई इंजीनियर बनें, कोई सीए, कोई वैज्ञानिक बनें। समाज से आईएएस, आईपीएस निकले, आरएएस बनें।

इसके लिए युवाओं को तो मेहनत करनी ही होगी। इसी के साथ समाज के अनुभवी-प्रबुद्ध लोगों को भी इसके लिए ज़िम्मेदारी लेनी होगी।

प्रशासन, खेल, शिक्षा, व्यवसाय और जीवन के हर क्षेत्र में धाकड़ समाज के होनहार बच्चे आगे बढ़ें। इसके लिए मैं आपको शुभकामनाएं देता हूँ। मान्यता है कि धरणीधर भगवान की पूजा से खेतों में अच्छी फसल होती है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि इस साल हमारे खेतों में अच्छी पैदावार हो, हर घर में समृद्धि आए।

भगवान धरणीधर और भगवान श्री कृष्ण जगत का कल्याण करें। कोटा-बूँदी और सम्पूर्ण हाड़ौती में सुख-समृद्धि का संचार करें; आज इस पावन अवसर पर मैं यही प्रार्थना करता हूँ।

श्री धरणीधर महाराज की जय...